मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9	मंगलवार 10 अगस्त 1982	संख्या 4

Board of trustees of Faqir Library Charitable Trust (Regd.) Manavta Mandir HOSHIARPUR.

1. Sh. Vishwa Mittra, Maraj. W. Indies
2. Dr. Ram Dev Rao, U. S. A.
3. Sh. K. M. Pardesi, President
4. Master Mohan Lal, Vice President
5. Sh. Subash Chander Kalia, General Secretary
6. Sh. Harbans Lal, Joint Secretary
7. His Holiness Anand Dayal Ji Maharaj
8. His Holiness Anand Rao ji Maharaj
9. Sh. S. N. Bhardwaj, Retd. Principal
10. Dr. K. L. Jaura, Retd, Univ. Professor
11. Sardar Lal Singh
12. Dr. Darshan Singh
13. Sh. Puran Chand.
14. Pt. Narain Dass Dogra
15. Sh. Ram Rakha Chouda[illegible]
16. Sh. Nand Singh Sihra, Canada

Executive Secretary cum Cashier

Dr. Paras Ram Aggarwal

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक 11-1-81

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटनहारी॥
लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत कथा कोई जाने।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावें, ज्ञानी नहीं पहचानें॥
अगुण सगुण के मध्य विराजे, नहीं ब्रह्म नहीं माया।
रूप अरूप के वरे परे तुम, नहीं प्रकाश नहीं छाया॥
सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा।
मन वाणी की गम नहीं तुममें, सब में सब से न्यारा॥
क्या कह करूँ तुम्हारी स्तुति, अजर अमर अविनासी।
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन धन सुख रासी॥
गो गोचर जहाँ लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई बरने पारा॥
तत्त्व अतत्त्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई।
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो, और अशब्द गति सोई॥
ऊँची दष्टि करे जो प्रानी, सार भेद कुछ पावे।
भेद पाय शरणागत आवे, आवागवन मिटावे॥

दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विवेका।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, रहूँ शब्द मिल एका।।

सन्तो ! देखो जग बौराना ।।

नेमी देखे धर्मी देखे, करें प्रात अस्नाना।
बहुत ही देखे पीर औलिया, पढ़ते वेद पुराना।।
घर घर मन्त्र देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु समेत शिष्य सब डूबे, अन्त काल पछिताना।।
हिन्दू कहे मोहे राम प्यारा, तुरक कहे रहमाना।
आपस में दौ लड़ लड़ मूअे मरम न काहू जाना।।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, यह जग भरम भुलाना।
कतेक कहूँ कहा नहीं माने आप ही आप बंधाना।

★

राधास्वामी !

दिमाग़ी हालत ऐसी हो गई कि अब बोलने-चालने, सत्संग कराने को जी नहीं चाहता। क्यों? दौड़-दौड़ के थक गया, बात समझ में आ गई, शान्ति मिल गई। आज यह शब्द निकला, कबीर साहिब कहते हैं सारी दुनिया पागल हो गई। सोचता हूँ क्या कबीर साहिब ने ठीक कहा? हाँ! ठीक कहा। कैसे ठीक कहा? हम किसी चीज़ को हासिल करने के लिए कितनी तरद्दद (मेहनत, कोशिश) करते हैं, कई बार सफल हो जाते हैं कई बार नहीं भी सफल होते और हम तरद्दद करते रहते हैं। तो अनुभव ने क्या बताया? कि जो कुछ किसी ने कर्म किये हुए हैं जो कुछ तुम ने दिया हुआ है और जो कुछ तुम ने किया हुआ है तुमको उसका फल मिलना है। लाख तुम कोशिश करो कि उससे ज़्यादा तुमको मिल जाये या उससे कम मिल जाये वह नहीं मिलेगा। एक तो मैं

बौरापन यह समझता हूं। तो आदमी को क्या चाहिए ? जो कुछ तुम चाहते हो वो दो। दौलत चाहते हो दौलत दो, मान चाहते हो मान दो। यदि अपनी इज़्ज़त कराना चाहते हो तो तुम दूसरों की इज़्ज़त करो। तुम चाहते हो तुम्हारी कोई मदद करे तो तुम दूसरों की मदद करो। एक तो बौराना यह है। मैं जो समझा वह कहता हूँ। खबर नहीं कबीर साहिब का क्या मतलब है, जग कैसे बौरा गया यह मुझे नहीं पता, मैं नहीं जानता, कबीर साहिब की बात कबीर साहिब को पता होगा :—

सन्तो ! देखो जग बौराना !!
नेमी देखे धर्मी देखे, करें प्रात अस्नाना।
बहुत ही देखे पीर औलिया, पढ़ते वेद पुराना ।।

अब कबीर साहिब को पता होगा कि उन्होंने जग बौराना कैसे कहा ? मेरी समझ में यह आया है कि हम शान्ति चाहते हैं, शान्ति को हासिल करने के लिए जो कुछ भी हम बाहर तरद्दुद, अनेक प्रकार के उपाय और यत्न करते हैं वह तरद्दद से नहीं मिलती है। दरअसल शान्ति हमारे पास है,

हमारे अपने अन्तर में है, हमारे मन में है। जो शख़्स अपने मन को साध लेता है उसको फ़ायदा होता है।

परसों-चौथ मेरे पास एक पत्र आया। एक व्यक्ति मुझको लिखता है कि आप में सब गुण हैं परन्तु आप अहंकारी हैं, उसने यह मुझको लिखा। मैं जानता हूँ कि उसने यह पत्र क्यों लिखा। वह व्यक्ति यहाँ आया था, बी० ए० पढ़ा हुआ है, आवारा था, दो महीने यहाँ मेरे पास रहा, मेरी बड़ी सेवा की। यहाँ मन्दिर में वह कहीं गया एक औरत बैठी थी, उसने उसको गुस्ताख़ी के लफ़्ज़ पेश किये (असभ्य शब्द मुँह से निकाले) हमारे आदमी ने कहा इसको निकाल दो, वह चला गया। मैं यह समझ के कि वह दु:खिया है, मूर्ख है, शादी-शुदा था, दो बच्चे थे उसके, मन्दिर से उसकी औरत को पच्चीस रुपये मासिक दो वर्ष भेजता रहा। फिर वह किसी डेरे में गया, वहाँ से मुझको लिखता है बाबा जी ! यहाँ एक बड़ी सुन्दर लड़की है, मैं उसके साथ शादी करना चाहता हूं। आप वहाँ का जो आचार्य है

उसको सफारिश करदो मेरी शादी हो जाय। और फिर वह यहाँ आया मैंने उसको आने नहीं दिया। फिर उसने वहाँ से पत्र लिखा कि आप अहंकारी हैं, मेरी पत्नी को जो पैसा भेजते हो बन्द कर दो। उसने अहंकारी इस वास्ते लिखा।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्यों फ़कीर चन्द! तू अहंकारी है? पहला प्रश्न तो यह है कि अहंकार कहते किसको हैं? अहम् और कार। अहम् अर्थात् मैं, कार अर्थात् निशान। संस्कृत में जब दो शब्द इकट्ठे होते हैं तो 'म्' अक्षर 'न्' में बदल जाता है। इस लिए उसको अहम्कार न कह कर अहंकार कह देते हैं। हमारे मन या हमारी अपनी तवज्ज़ह का किसी दूसरी चीज़ के साथ जुड़ जाना, जोड़ना और उसको अपना समझना ही अहंकार है और कोई अहंकार नहीं। हम सोचते हैं कि यह शरीर हमारा है, यह दौलत हमारी है, पत्नी हमारी है, पिता, मजहब और गुरु हमारा है जब तक हम यह सोचते रहते हैं हम अहंकार में हैं। सो जो आदमी इस दुनिया में शरीरधारी है वह किसी सूरत में भी

अहंकार से बच सकता ही नहीं। इस ख़्याल से मैं अहंकारी हूँ, मैं ही नहीं तमाम दुनिया, तमाम संसार अहंकारी है। आप सोच लो मेरी बात को मैंने क्या कहा! अहंकार, अहम्‌कार, अपना निशान, हम अपने आप को किसी न किसी ख़्याल के साथ, किसी न किसी चीज़ के साथ या इष्ट के साथ जोड़कर उसको अपना समझ लेते हैं। तो जब तक हम किसी चीज़ को अपना समझेंगे वह अहंकार है, परन्तु अहंकार से तो बच नहीं सकते, यदि अहंकार के रूप का हम को पता लग जाये तो जब तक हमारा जीवन है हम अपनी ज़रूरतों के लिए दूसरों के साथ जुड़ें और अगर किसी समय वह चीज़ न रहे क्योंकि जिसके साथ हम जोड़ेंगे वह टूटेगी, जहाँ जोड़ी तहाँ तोड़ी। तो जब वह टूट जाय तो फिर अफ़सोस न करे आदमी। यही सन्तमत का एक सार है, मास्टर जी! समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा है आपको!!

अहंकार के बिना दुनिया में हमारा गुज़ारा नहीं है, कहाँ जाओगे! केवल इसके रूप को समझ लो। क्योंकि जिस जगह हम अपने ख़्याल को जोड़ते हैं

पुत्र के साथ, दौलत के साथ, गुरु के साथ, ख़ुदा के साथ, किसी के साथ भी जोड़ते हैं वह तो हम अपना ही निशान बना लेते हैं परन्तु वह चीज तो हमेशा रहेगी नहीं, (रहेगी तो तुम्हारी ज़ात हमेशा रहेगी, तुम क़ायम रहोगे) जहाँ तुम जोड़ते हो वह तो जुड़ेगी नहीं, वह टूट जायगी। तो जब वह टूटे उस समय यदि इस बात का ज्ञान है तो वह दुःख नहीं मनायेगा। दौलत है, enjoy करो, कल को यदि चली जाय तो फिर हाय-हाय न करो क्योंकि जो चीज़ पैदा हुई है, जिसके साथ तुमने अपने आप को लगाया है वह तो एक वक्त जायगी ! इस लिए कबीर साहिब कहते हैं कि सम्पूर्ण जगत् बौराना है।—

सन्तो ! देखो जग बौराना।
नेमी देखे धर्मी देखे करें प्रात अस्नाना ।।

और वह नेम, धर्म जो कहते हैं अहंकार से कहते हैं :—

बहुत ही देखे पीर औलिया पढ़ते वेद पुराना।
घर घर मन्त्र देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना ।।

आप देख लो ! हम लोग दूसरों को जाकर उपदेश देते हैं, आजकल गुरु जब बाहर जाते हैं तो

लाऊडस्पीकर से नामदान का ढिंढोरा पिटाते हैं कि फलाँ दिन नाम दान मिलेगा। वह जो आदमी यह सोचता है कि मैं गुरु बनके किसी को नाम दे रहा हूँ वह अभिमानी है, वह अहंकारी है :—

गुरु समेत शिष्य सब डूबे, अन्त काल पछिताना।

देखो! क्या कहते हैं। तभी तो मैं कहता हूँ कि मैं यदि उठा हूँ तो केवल इस बर्तमान गुरुइज्म का सुधार करने के लिए उठा हूँ। हम लोगों को ज़बर्दस्ती नाम दिया जाता है, ज़बर्दस्ती। क्यों? अपने मान, अपनी इज़्ज़त और अपनी दौलत के लिए, यह देख लो! तो करना क्या चाहिए? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ, कि फ़कीर चन्द! सारी ज़िन्दगी गुज़र गई तुझे क्या मिला, बता? मुझे यह मिला कि मेरे वहम चले गये; न तो मैं अब किसी गुरु को पूजता हूँ न मैं रब्ब को पूजता हूँ, न किसी को पूजता हूँ, मुझको समझ आ गई कि मैं हूँ कौन। मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ, जिस तरह पानी में बुलबुला पैदा होता है, वह अपने आप टूट जाता है। न तो मुझे ख़्याल रह गया राम का, न कृष्ण का, न गुरु का, न किसी का। हो क्या गया? मेरी समझ में आ

गया कि मैं हूँ ही नहीं। एक दिमाग़ी हालत पैदा होती है, उसमें 'मैं' आई हुई है उस 'मैं' ने मुझे सारा जीवन खराब किया। 'मैं' बनके मैं शिष्य बना, 'मैं' बनके पिता बना, पुत्र बना, अफसर बना, मातहत बना, वो झगड़े खत्म हो गये। अब चूँकि झगड़े खत्म हो गये, काम करने को जी नहीं करता। परन्तु मुश्किल यह है कि वह जो पिछला कर्म है मेरे गले पड़ा हुआ है वह मुझे घसीटे लिए जाता है। तो आज यह शब्द पढ़ा गया :—

सन्तो ! देखो जग बौराना ।।
नेमी देखे धर्मी देखे करें प्रात अस्नाना।
बहुत ही देखे पीर औलिया पढ़ते वेद पुराना।।

अब मैं सोचता हूँ कि कबीर साहिब ने यह क्या कहा, क्या हम वेद, पुराण न पढ़ें ? नहीं ! आखिर हम वेद पढ़ते हैं, किस लिए पढ़ते हैं ? हम अभ्यास करते हैं, किस लिए करते हैं ? हम कोई काम करते हैं, किस लिए करते हैं ? यदि उस काम के करने का जो उद्देश्य है वह हमको नहीं मिलता तो फिर हम जो कुछ करते हैं उसका क्या लाभ ? हमने गुरु धारण किया, किसलिए किया ? शान्ति के लिए किया।

अगर शान्ति नहीं मिलती तो गुरु धारण करने से क्या लाभ ? ठीक है कि नहीं, झूठ तो कोई है नहीं :—

घर घर मन्त्र देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना ।

अब देखो । कहाँ यह सन्तमत कबीर साहिब का और कहाँ आजकल का गुरुमत ! ज़बर्दस्ती नाम देते हैं, ज़बर्दस्ती । और कबीर साहिब क्या कह गये ! जो आदमी यह समझ कर नाम देता है कि मैं किसी को नाम देता हूँ वह अपराधी है, उसमें अहंकार है। नाम दिया नहीं जाता नाम लिया जाता है, तुमको मैं बताए देता हूँ । कौन है नाम लेने का अधिकारी ।—

पहले दाता शिष्य भया जिस तन मन अर्पा सीस,
पीछे दाता गुरु भया ज़िस नाम दिया बख्सीस ।

यह कबीर साहिब का शब्द है, वह कहते हैं कि पहले शिष्य दानी बनता है । क्या करता है ? वह तन, मन और अपना सिर गुरु के हवाले कर देता है। अब वह तन, मन और सीस के देने का मतलब क्या है, क्या सिर काट कर दे देता है ? सत्संग में जाकर उसको सत्संग से यह ज्ञान हो जाता है कि भई ! मैं शरीर नहीं हूं; मैं मन नहीं हूँ, यह जो कुछ भी है यह तो माया है, मैं नहीं हूँ और उसका अपना

अहंकार चला जाता है। जब उसको यह हालत आ जायेगी, उसको नाम मिल गया। मेरी सूक्ष्म बात को समझने की कोशिश करो। दुनिया ने यह समझा हुआ है कि धन दे दो, सिर दे दो यह मतलब नहीं है बल्कि सत्संग में बैठकर बात को समझो कि असलियत है क्या, मैं कौन हूँ ? जब उसको यक़ीन हो जाता है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मेरे जो ख़्यालात हैं यह नहीं हैं केवल यह कल्पना है और उसकी अपनी खुदी चली जाती है तो शेष उस आदमी की जो Condition रह जाती है वह है नाम की प्राप्ति अर्थात् वह जो हालत उसकी अपने Self की है वह है नाम की प्राप्ति, यह है नाम दान। मैं नाम दान तो देता हूँ, जो कुछ मेरी वाणी है यही नाम दान है, यही मेरा नाम दान है बशर्ते कि कोई इसको समझे। यदि किसी ने समझना ही नहीं है, अंधेरे में चलना है तो उसका ज़िम्मेवार कौन है।

आप लोग आ जाते हैं, मैं फँसा हुआ हूं, धसीटा जा रहा हूँ, तो मैं आप लोगों को क्या कहना चाहता हूँ कि सत्संग में आओ, बात को समझो और अगर

फ़र्ज़ करो कि तुम्हारी बुद्धि इतना नहीं काम करती तो कोई हर्ज नहीं, एक इष्ट बना लो और उसको अपने अन्तर समझो, बाहर नहीं और हर समय यह ख़्याल रहे कि वह तुम्हारा है और तुम उसके हो। मेरे पास प्रतिदिन पत्र आते हैं। कल भी एक आदमी का पत्र आया, घई एक बड़ा अफ़सर है बीमार था। वह कहता है बाबा जी! मैं सख्त बीमार था। बहुत दु:खी था, आगे भी उसका पत्र आया था, कहता है कि मैंने फोटो के सामने आपसे गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की। आप ने कहा—फलाँ दवाई खा ले, मैंने वह दवाई खाई मैं ठीक हो गया। अब मैं तो गया नहीं, उसको दवाई किसने बताई? उसके अपने मन की सच्ची लगन ने बताई। तो मैं क्या कहना चाहता हूँ? ऐ मेरे मित्रो! बहिनो! भाइयो! गुरु एक ताक़त है वह हर समय तुम्हारे अन्तर रहती है, तुम सच्चे दिल से प्रार्थना करो वह तुम्हारी सहायता करेगा, वह हर समय तुम्हारा साथी है। फ़कीर चन्द या किसी भी और गुरु ने नहीं आना, किसी राम ने बाहर से नहीं आना, जो कुछ भी आना है वह तुम्हारे अन्तर प[illegible]

मौजूद है, यह है जो मैं कहना चाहता हूँ। क्यों कहना चाहता हूँ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, मेरा अपना ही कर्म था। मेरे लिए यह सन्तमत एक बिलकुल नई चीज़ थी। आरती के शब्द में लिखा हुआ है :—

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटनहारी।

इस गुरु की वह सिफ़त बताते हैं कि गुरु है क्या?

लीला अगम अपार अमाया, अद्‌भुत क्या कोई जाने।
ऋषि मुनि योगी पार न पावें, ज्ञानी नहीं पहिचानें।

अब देख लो! जब ऐसे शब्द पढ़े कि गुरु जो सहायता करता है उसको ज्ञानी नहीं जान सकते, ऋषि मुनि नहीं पार पा सकते :—

अगुण सगुण के मध्य विराजे नहीं ब्रह्म नहीं माया।
रूप अरूप के वरे परे, नहीं प्रकाश नहीं छाया॥

देखो! वह गुरु को कहते हैं कि रूप-अरूप से परे है, अगुण-सगुण के मध्य विराजता है :—

सब में व्यापक तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा।
मन, वाणी की गम नहीं, तुममें सब में सब से न्यारा॥

मेरे जीवन की research है, उस गुरु को तलाश करते-2 आयु गुज़र गई कि नहीं गुज़र गई। मैं नाककटों में तो शामिल नहीं हुआ, ऐसे शब्दों को सुनकर मैंने प्रण किया था कि यह जो कुछ लिखा हुआ है कि वह गुरु कौन है जो सत्त, असत्त और माया, काल के पार है, ब्रह्म भी नहीं है, प्रकाश भी नहीं है वह है क्या चीज़, उसका मुझे पता नहीं लगता था। चूँकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा इस लिए मैं कहता हूँ कि वह जो गुरु है वह है क्या? मुझको असली गुरु का दर्शन केवल सत्संगियों के अनुभवों द्वारा मन के रूप की समझ आने के बाद हुआ। अब जिस तरह घई का कल पत्र आया, मैं तो गया नहीं तो यकीन हो गया न! कि उसकी सहायता करने वाला कौन था? उसका अपना ही मन था। राधास्वामी मत के समझने वाली दुनिया अभी पैदा नहीं हुई। यही राधास्वामी मत कहता है :—

काल ने रक्षक कला दिखाई, काल ने अपनी पूजा कराई।

वह काल कौन है? तुम्हारा अपना मन है। जिसके अन्तर बाबा फ़कीर प्रकट होता है, उसकी

सहायता करता है वह बाहर का कोई नहीं आता, उसका अपना मन ही उसकी सहायता करता है, यह है राज़, यह है सच्चाई। तो जब से मुझे यह समझ आई कि सब कुछ मन का चक्कर है तो अब मैं क्या करता हूँ ? मन को छोड़ जाता हूँ, मन के परे जाने के बाद जब प्रकाश और शब्द में रह कर उस वस्तु की तलाश करता हूँ जो प्रकाश और शब्द में रहती है वह है सच्चा सत्तगुरु। और वह सत्तगुरु है कौन ? मेरी अपनी ज़ात जो ग़लती में आकर शिष्य बनी हुई थी, उसको अज्ञान था। बाहर का गुरु मिल गया जिसने उसको उसका भेद बता दिया कि बेवकूफ़ ! यह बात ऐसे नहीं, ऐसे है। अब यही समझ आ गई, अब अगर मैं कुछ बन गया तो मैं क्या करूँ ?

क्या कह करूँ तुम्हारी अस्तुति अजर अमर अविनाशी,
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन घन सुख राशी।

कौन है अज़र, अमर ? वह जो मेरे अन्तर में या तुम्हारे अन्तर में प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। यदि प्रकाश अजर, अमर हो

तो प्रकाश ही रहे, यदि शब्द अजर, अमर हो तो शब्द हमेशा ही रहे; यदि रूप अजर अमर हो तो रूप हमेशा ही रहे, अजर, अमर, तो वह चीज़ है जो मेरे अन्तर या तुम्हारे अन्तर रह कर सब कुछ देखती है जाग्रत में भी वह मौजूद है, स्वप्न में भी वह मौजूद है, सुषुप्ति व तुरिया में भी वह मौजूद है, प्रकाश को देखती है तब भी वह मौजूद है; शब्द को सुनती है तब भी मौजूद है वह जो चीज़ है वह है असली सत्तगुरु। और कौन है? वह तुम्हारी अपनी ही ज़ात है कोई दूसरा गुरु नहीं। बाहर के गुरु की यही duty है कि वह जीव को :—

घर में घर दिखलाय दे सो सत्तगुरु पुरुष सुजान।

यह है बाहर के गुरु की duty। परन्तु यह इतनी बड़ी भारी बात है, मैं ठहर नहीं सकता। मैं जानता हूँ, फिर क्या करूँ?

गो गोचर जहाँ लग मन जाई सो नहिं देस तुम्हारा।
माया काल के परे ठिकाना क्या कोई वरणे पारा॥

मुझे पता लग गया, मैंने तुमको समझा भी दिया परन्तु वहाँ ठहरा नही जाता, फिर क्या करना है :—

तत्त्व अतत्त्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई,
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो और अशब्द गति सोई।
ऊँची दृष्टि करे जो प्राणी, सार भेद कुछ पावे।

जिस तरह मैंने सार भेद पा लिया कि बात यह है फिर क्या करे?

भेद पाय शरणागत आवे, आवागवन मिटावे।

इस बात को समझकर जब तक जीवन है, वहाँ तो मैं ठहर नहीं सकता, करूँ क्या? शरणागतम्! वह जो परमतत्त्व आधार है अपने आप को उसके सपुर्द करता रहता हूँ, यहाँ मुझे शान्ति है। शरीर के बाद क्या होगा, यह मुझे पता नहीं, मैं नहीं जानता। तो आज कबीर साहिब का शब्द निकला था :—

सन्तो! देखो जग बौराना॥
नेमी देखे धर्मी देखे करें प्रात अस्नाना।
बहुत ही देखे पीर औलिया पढ़ते वेद पुराना॥

सब में अहंकार था। जो कुछ भी हम करते थे सब में अहंकार है। दुनिया में अहंकार की कई किस्में हैं। स्थूल अहंकार, सूक्ष्म अहंकार, कारण अहंकार, अहंकार

के बिना तो हमारा जीवन नहीं है। क्योंकि जब तक हम जिन्दा हैं कहीं न कहीं तो लगेंगे, हमारा कोई न कोई ठहरने का मुकाम होगा। तो जहाँ ठहरने का मुकाम होगा वहाँ अहंकार आ जायगा परन्तु यदि ज्ञान है तो वह अहंकार जो है वह दुःखदाई नहीं होगा। बस इतनी ही बात है और कुछ नहीं :—

घर घर मन्त्र देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना।
गुरु समेत शिष्य सब डूबे अन्त काल पछिताना ॥

पछताना तो आप ही हुआ। क्योंकि सारी ज़िन्दगी गुरुओं के दरबार में पड़े रहे परन्तु मिला कुछ नहीं, शान्ति नहीं मिली इस लिए दोनों पछताये। अरे! सभी पछताते हैं। मेरे दाता दयाल थे अन्त समय में उन्होंने शब्द लिखा है :—

ले लो चरणों में लगा लो ऐ मेरे कृपाल दाता।
ज़िन्दगी के झमेले पापड़ थे बहुत वेले,
फिरता हूँ मारा मारा सिर पर है बोझा भारा।
दुखिया की लाज रख ले चित्त ध्यान से न बहके।

क्योकि उन्होंने भी धाम बनाई थी बाबा सावन सिंह जी थे, एक लाभ सिंह हुआ है और

काबुल सिंह C. I. D. का इन्स्पैक्टर था, उसने उसको बोला भई! फ़कीर चन्द तो कहता है कि वह कहीं नहीं जाता, उसने पाँच-दस गाली तो फ़कीर चन्द को निकाली और पाँच-दस गाली मेरे गुरु महाराज को निकाली। उसने बोला, गाली तो निकाली, कोई बात सुनाओ? उसने कहा, एक बात मैं जानता हूँ कि जब हजूर बाबा सावन सिंह जी सख़्त बीमार थे तो मेरा पहरा था रात को, तीन बजे आवाज़ मारी, कौन है बाहर? जी सच्ची सरकार! ओए लाभ सिंहा जो कुछ मैंने करना सी वो ना कीता। बाबा जी ने कहा था डेरा बना देना, अमीर मेरे काबू आ गये। डेरा बन गया। अब मैं आप दु:खी हूँ। इस लिए इसी ख़्याल से मैं इस संसार में आया हूँ, मेरे दिमाग़ को प्रकृति ने हिलाया है कि सन्तमत को साफ कर जाऊँ ताकि हम लोगों को ये महात्मा लोग या गुरु लोग अज्ञान में रख कर लूटें न। ऐसे केस मेरे सामने आते हैं जहाँ मेरा रूप प्रकट होता है कोई मदद कर जाता है, मैं अगर चुप कर जाता तो मैं आज लाखों, करोड़ों रुपयों का मालिक होता। रोज़ पत्र आते हैं;

कोई दिन ऐसा नहीं कि एक-आध पत्र न आ जाये। जितना मर्ज़ी चाहे मैं रुपया कमा लेता परन्तु मैं जानता हूँ मैं तो गया नहीं। तो मैंने यह काम इस लिए किया है कि यह जो वर्तमान गुरुइज्म या मज़हब हैं इन्होंने ग़लत ख्याल देकर के हम भोले-भाले अज्ञानी जीवों को मूर्ख बनाकर उनकी जायदादें, उनकी दौलतें ली हैं। इस ख्याल को लेकर के मैंने इन्सान बनो की यहाँ आवाज़ उठाई है।

दुनिया तो अनजान है। एक माई आती है, बीमार है, मेरे पास दवाई लेकर आ जाती। अरे भई! मैं स्वयं बीमार होता हूँ तो डाक्टरों के पास जाता हूँ, मैं तेरा इलाज़ क्या करूंगा! आदमी सहारा चाहता है अगर सहारा उसका सच्चा है तो उसका काम बन जाता है अर्थात् ऐसे-ऐसे केस मेरे सामने आते हैं, मैं तुम लोगों को लूटना नहीं चाहता खुशी से यदि तुम्हारा जी चाहे यदि समझते हो कि मेरा काम ठीक है तो चार पैसे मन्दिर में देना चाहो तो दो अगर नहीं चाहते हो तो मैं इसकी परवाह नहीं करता

परन्तु सच्चाई ब्यान करने से टल नहीं सकता। जो कुछ तुमको मिलता है यह तुम्हारा विश्वास है, तुम्हारी श्रद्धा है। तुम्हारा यक़ीन है जहाँ भी तुम रखो, यह बिलकुल सच्ची बात है। अब यह माई है, इसको तो होश नहीं! कहती है मुझे तू ले चलना। अब मैं इसको क्या कहूँ। तेरे कर्मों ने तुझको साथ ले के जाना है, मैंने तुझे पार नहीं ले जाना माई! मैंने मर जाना है, तुझे कहा है तू विश्वास रखा कर, गुरु हर समय तेरे साथ हैं, मैं नहीं तेरे साथ रहता, जो सच्चा सत्तगुरु है वह तेरे साथ रहता है। चार दिन के जीवन में मैं आया हूँ, हेराफेरी करके तुमको लूट के ले जाऊँ; मैं कहाँ जाऊंगा। मेरी तो आँख खोल दी सत्संगियों ने। मेरा भी तो एक दृश्य ही था न अपने जीवन का! बारह वर्ष जो कुछ मैंने कमाया सब दिया, वह समर्थ थे जो उन्होंने नहीं लिया, यह दूसरी बात है परन्तु अज्ञान में आकर लुट गया था न! मैं नहीं चाहता तुम अज्ञान में आओ, खुशी के साथ सहायता करो, जहाँ तुम्हारी मर्ज़ी है करो, नहीं करनी है तो मत करो मगर बात मैं सच्ची कहता हूँ। मेरी तो जान काँपती है, खबर नहीं कि

मैं किस तरह मरूंगा, मेरे साथ क्या होगा, मैंने इन महात्माओं का हाल देखा बड़ी-२ बुरी मौत मरे। राधास्वामी दयाल स्वयं दो वर्ष सख़्त बीमार रहे, स्वामी रामकृष्ण परमहंस का क्या हाल हुआ और गुरुओं के साथ क्या कुछ बीती, दाता दयाल की धाम उजड़ गई, मैं कहता हूँ इतने महात्मा हो कर के फिर इनकी कोई सहायता न हुई ? तो मुझको वहम आ गया कि चूँकि इन्होंने Public में सच्चाई नहीं ब्यान की और यही बात फ़कीर साहिब ने कही है :—

घर घर मन्त्र देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु समेत शिष्य सब डूबे, अन्त काल पछिताना॥

सभी पछताते हैं ! मैं नहीं पछताऊंगा। मैंने किसी को धोखा नहीं दिया न अपनी गरज़ के लिए मैंने कोई काम किया, मन्दिर मैंने जरूर बनाया, एक सच्चाई से बनाया अगर चलना होगा तो चलेगा नहीं तो मुझे क्या परवाह इस बात को। अगर मालिक को मंजूर है सच्चाई संसार में फैले तो चलेगा अगर मालिक को मंजूर नहीं है तो न चले; मैंने क्या लेना है बिलकुल सच्ची बात।

आप लोग आ जाते हैं आपको एक बात सच्ची कह देता हूँ, कुछ मत करो सिर्फ अपनी नीयत को साफ रखो। अपने ज़ाती मतलब के लिए किसी के साथ हेराफेरी, धोखा-फ़रेब, चारसौबीस मत करो। मेरी समझ में इसके सिवाय और कोई सच्चा धर्म मैंने कोई देखा नहीं। जब आपकी नीयत साफ है, आप ने अपनी ज़ाती गरज़ के लिए किसी के साथ हेराफेरी, धोखा-फ़रेव नहीं किया तो आपको पाप किसका, गुनाह किसका। जितना जिसने लेना है उतना किसी ने ले लेना है, पिछले जन्म का लेना-देना भुगतना है।

मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया। आज कबीर साहिब का शब्द था :—

सन्तो ! देखो जग बौराना ॥
हिन्दू कहे मोहे राम प्यारा, तुरक कहे रहमाना।
आपस में दोऊ लड़-2 मूओ, मरम न काहू जाना।

क्या झूठ है इसमें ? मैंने तो इसको साफ कर दिया, कोई मुहम्मद बाहर से तुम्हारे अन्तर नहीं आता, कोई राम, कृष्ण या बाबा फ़कीर बाहर से

तुम्हारे अन्तर नहीं आता जिस प्रकार का ख़्याल दिमाग़ में पड़ा हुआ है जब तुम पुकार करते हो, वह संस्कार तुम्हारा, रूप बना के तुम्हारे सामने आ जाता है और हम ग़लती में पड़ गये कि हाँ! बाबा फ़कीर आया या कोई भी और गुरु आया या राम आया और इन्सानी नसल बँट गई, कोई मुसलमान बन गया, कोई सिक्ख बन गया, हम को बाँट दिया इन मज़हबों ने, इन पन्थों ने, बिलकुल बाँट दिया। इसका परिणाम ? हम दुःख भोगते हैं, पाकिस्तान में क्या हुआ देखते नहीं हो ? इस लिए सन्त दुनिया में आते हैं Unity of Religion and Unity of Humanity (धर्म और मानमता की एकता) के लिए :—

कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह जग भरम भुलाना।
केतिक कहूँ कहा नहीं माने, आप ही आप बंधाता॥

आप ही बंधे हुए हैं, तमाम जगत् बौराना हुआ है परन्तु इस बौराने से बचना बड़ा मुश्किल है, मैं भी कहता तो हूँ मगर मैं जानता हूँ यह कितना कठिन काम है क्योंकि ऊँचे दर्जे को मैं भी जानता तो हूँ मगर ठहर नहीं सकता। तो मेरी

समझ में क्या आया ? जब तक जीवन है 'शरणागतम्'। एक मालिक है, उसका एक रूप मान लो, उसको मत समझो कि वह फ़क़ीर चन्द है या कोई और गुरु है उसको मालिक का रूप पूरा मान लो। अपने आप को उसके सपुर्द करते रहो चलते-फिरते उठते-बैठते, तो तुम्हारे सारे काम न हो जायें तो मुझे जो मन में आये कहो, मैं ज़िम्मेवार हूँ। मेरा अनुभव कहता है न ! लोग मेरे रूप में मानते हैं, उनके काम हो जाते हैं और मेरे बाप को पता नहीं होता कि कौन उनकी सहायता कर गया। इससे मुझे यक़ीन हो गया न ! कि जो कुछ है ऐ इन्सान ! तेरा अपना विश्वास है, तेरा अपना यक़ीन है, तेरा अपना ही निश्चय है। आप मेरे पास आ जाते हैं मैं एक ज़िम्मेवारी को महसूस करता हूँ। Short cut बता देना चाहता हूँ, कहीं मत भटका खाओ, केवल उस एक मालिक को मानो। चूँकि उसका कोई रूप नहीं है, वह सबसे न्यारा है। एक रूप उसका मान लो, बस ! अपने आप को उसके सपुर्द करते रहो तुम्हारे सारे काम दुनिया के होते रहेंगे, मेरे होते हैं और दूसरों के होते हैं

तो इससे मुझे यकीन हो गया। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ दाता! आप ने काम दिया था, मुझे नहीं पता मैं ग़लत हूँ या मैं ठीक हूं मेरे कर्म थे आपके चरणों में चला गया, आपने कहा तालीम बदल जाना। हो सकता है मेरे भाइयो! वीरो! मैंने जो कुछ समझा हो सारा ग़लत हो, मुझे कोई दावा नहीं आप का जी चाहे मेरे सत्संग में आया करो जी चाहे मत आया करो। मैंने अपना कर्म भोगा, गुरु की आज्ञा पालन किया, जो मेरा अपना ज़ाती तजुर्बा था उसको मैंने लिया और साफ शब्दों में ज़ाहिर कर दिया। ठीक है या ग़लत है इसका मैं ज़िम्मेवार नहीं, मेरी नीयत साफ है। आप लोग आ जाते हैं मैं बड़ी ज़िम्मेवारी को महसूस करता हूँ। बहुत ज़िम्मेवारी को महसूस करता हूँ!! और सच्चे दिल से मालिक से प्रार्थना करता हूँ दाता! आपने काम दिया था, यह लोग आ जाते हैं, अब मेरी दाढ़ी की इज्ज़त या तेरे नाम की इज्ज़त तू रख! ये बेचारे दु:खी आते हैं इनके काम बन जायें!! मैं यही कर सकता हूँ इससे ज्यादा और मेरे पास कुछ नहीं। सब को राधास्वामी।

सत्संग परम सन्त परम दयाल
फ़कीर चन्द जी महाराज

अलीगढ़, दिनांक 29-1-81 (सायंकाल)

कबीर साहिब की वाणी है :—

मन को मारूं पटक कर टूक टूक हो जाय।
विष की क्यारी बोय कर लुन्ता क्यों पछताय ॥

कबीर साहिब कहते हैं कि मैं मन को ऐसा मार दूं, क्यों? यह जहर बीजता है तो फिर जब उसका फल लेता है तो रोता क्यों है। मन का ज़हर क्या है? हमारे गन्दे विचार, किसी के साथ दुश्मनी, किसी के साथ घृणा, किसी की बहू-बेटी से अनुचित सम्बन्ध, चार सौ बीस, हेराफेरी, धोखा-फ़रेब। जब हम यह काम करते हैं तो फिर यह उम्मीद रखें कि हमको उसका फल अच्छा मिलेगा, कैसे मिलेगा? तुम्हारे पिता जी थे श्री कृषक जी, उपदेश करते थे। वे किताबें लिखने में बहुत प्रसिद्ध हुए हैं,

जिनके दो संस्करण छप चुके है परन्तु उनका अपना क्या हाल हुआ ? दो साल चारपाई पर पड़े रहे ? रहे कि नहीं रहे ? आँखों से नज़र नहीं आता था। टाँग टूट गई थी, चल नहीं सकते थे। मैंने उनका हाल देखा, ऊपर बंधे हुए रस्से को पकड़ कर उठते थे, बैठते थे। भाई नन्दूसिंह जी मेरे गुरुभाई थे, डेढ़ साल बीमार रहे, ज़बान नहीं चलती थी। इससे साबित हुआ कि जो कर्म इस जन्म या पिछले जन्म के किये हुए हैं उनके फल से न तो कोई सन्त बचा न कोई अवतार, पीर, पैग़म्बर व रसूल ही बचा।

आप लोग आ जाते हैं मेरे सिर पर एक ज़िम्मेबारी है। मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूँ। मेरी क्या ड्यूटी है ? आपको सच्ची बात बता देना कि जो कुछ भी हम करते हैं यह भूल जाओ कि इसके फल से आप बच सकते हैं। मुझे मत्था टेकने से यदि तुम यह चाहो कि तुम तर जाओगे यह बिलकुल ग़लत है। यह एक आरज़ी आनन्द का जज़बा है, सोच लो मेरी बात को मैंने क्या कहा ! तो फिर मैं सोचता हूँ कि

वे असली कर्म क्या हैं जो हम करें ? मेरी समझ में यह आया कि निजी (Personal) लाभ के लिए किसी के साथ धोखा-फ़रेब करना, झूठ बोलना, चार सौ बीस करनी यही कुकर्म हैं, बाकी दुनिया व दुनिया के कारोबार में अपनी ज़ाती गरज़ कोई नहीं। जैसे एक जज है वह हालात को देख कर के किसी को फाँसी दे देता है क्या उसे कोई पाप है ? काहे का पाप है उसे ! क़ानून बना हुआ है गवाह उसके विरुद्ध हैं, उसने उस को सज़ा दे दी, सवाल तो है सिर्फ़ अपनी नीयत का। मैं यह सत्संग दिये जाता हूँ, कभी-कभी महीने में बैठक हुआ करे तो यह सुना करो ताकि लोगों की आँखें खुलें परन्तु आँखें उनकी खुलेंगी जो अपना जन्म बनाना चाहते हैं अन्यथा मेरे पास तो जितने आते हैं, एक बूढ़ी माई आई कहती थी मेरे भाई के इतने बच्चे मर गये, रोती थी। मैंने कहा माई ! सब के बच्चे मरते हैं तू किस वास्ते बुढ़ापे में आ के रोती है, जन्मना मरना तो हर एक शख़्स के साथ है, क्या करे कोई रो के ! दाता दयाल का एक शब्द है जो कि जब मैं सन् 1931 में धाम गया था तब उन्होंने लिखा था :—

नर भोगे बारम्बार अवश्य फल करम किये का,
यह सोच समझ चित्त धार मरम जग जनम जिये का।
सुर नर देवी देव महर्षि और ब्रह्म अवतारा,
अशुभ करम जो किये थे उनसे मिला नहीं छुटकारा।
एक जो कहिये राम महाप्रभु पुरुषोत्तम मर्यादा,
गुप्त घाट सरजू जल बूड़े रामायण संवादा।

राम क्यों बूड़े ? राम ने मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने के लिए अपनी स्त्री को, जिसको कि रावण से ला कर और अग्नि में परीक्षा ले के टैस्ट किया था उसको बिना उसका क़सूर जताये, रात को 12 बजे लक्ष्मण को कहा कि जंगल में छोड़ आओ। क्यों ? अपने मान के लिए कि लोग मुझे यह कहें कि मैं बड़ा मर्यादा पुरुषोत्तम हूँ, जनता को खुश करने के लिए ऐसा किया। नतीजा क्या निकला उदासी आ गई भरत और शत्रुघ्न को साथ ले के सरयू नदी के बीच में किश्ती में जा के डूब के मर गये, कर्म के फल से वो भी न बचे :—

दूजे कहिये कृष्ण विवेकी सोलह कला के पूरे।
यदु कुल नाश भील की गाँसी मूए मान मद चूरे।।

अब तुम सोचो ! कृष्ण जी ने लड़ाई के मैदान

में अट्ठारह अक्षौहिणी सेना मरवा दी, उन का अपना सारा वंश शराब पी के आपस में खानाजंगी कर के मर गया। हम लोग कृष्ण जी से यह प्रार्थना करते हैं कि वो हमारी मदद करें, वो अपने बच्चों की, अपने वंश की मदद न कर सके तुम्हारी कहाँ से करेंगे ! सोचो, मेरी बात को मैंने क्या कहा है तुमको अगर कृष्ण जी की भक्ति से कुछ मिलता है तो तुम्हारा अपना विश्वास और श्रद्धा है, न कोई कृष्ण देता है, न कोई बाबा फ़कीर देता है, न कोई मुहम्मद या अली या राम या गुरु नानक देते हैं। तुमको जो कुछ मिलता है यह तुम्हारे अपने ही विश्वास और अपनी ही श्रद्धा का फल मिलता है। यह है सच्चाई जो मैं बयान कर रहा हूँ परन्तु अब क्या हो रहा है? मुसलमान समझते हैं कि मुहम्मद साहिब हमारा राखा है वे मुहम्मद साहिब को याद करते हैं, हम हिन्दू राम को याद करते हैं, सिख गुरु को याद करते हैं। कोई मदद नहीं करता, हमारा अज्ञान है, हमको यह पता नहीं कि जो मुहम्मद है, राम है या कृष्ण है ऐ इन्सान ! तेरा अपना ही विश्वास है, तेरा अपना

ही मन है। इस भ्रम में आ कर के इन्सानी नसल बँट गई। मेरे ज़िम्मे चूँकि ड्यूटी थी :—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही॥

मैंने सोचा कि मैं जग कल्याण के लिए क्या करूँ? मैंने वह जो राज़ था, जिसको आज दिन तक सब ने छुपा कर रखा और केवल इशारों में कहा मैंने उस को खोल दिया कि अगर कोई शख़्स इस मज़हबी पक्षपात को दूर करना चाहता है तो वह सच्चाई पर आ जाय कि भई! तुम्हारी मर्ज़ी है मुहम्मद को पूजो, राम या कृष्ण को पूजो, वो जो कुछ जिसको भी पूजते हो वह तुम्हारा अपना ही आत्मा है, अपना ही आप है :—

तीजे युधिष्ठिर धर्मराज की अकथ अपार कहानी।
भाई भार्या संग गले सो हिम सब कोई जानी॥

अब देखो! लड़ाई हुई सब मारे गये राज किस पर करते? उदासी आ गई, पाँचों भाई मरने के लिए गये। जब बाकी मर गये, लिखा हुआ है

कि युधिष्ठिर धर्मराज के पास देह के साथ गया तो उसने युधिष्ठिर को कहा कि तुमको ढाई घड़ी का नरक है। उसने बोला, मैंने क्या अपराध किया ? उसने कहा तू ने Policy की थी "अश्वत्थामा हतो न जानामि नरो वा कुंजरो वा" Policy से काम लिया था उसके बदले तुम को ढाई घड़ी का नरक है। अब मैं सोचता हूँ फ़कीर चन्द ! अगर यह सच है और मैं गुरु बन के Policy करता हूँ कि हाँ मैं तुम्हारे अन्दर प्रकट हुआ था, मैंने यह कर दिया, मैंने वह कर दिया तो अगर Policy करने से धर्मराज युधिष्ठिर को भी ढाई घड़ी का नरक हुआ तो हमारा क्या हाल होगा। अब तो मैं यह समझता हूँ कि जितने महात्मा गुज़रे हैं, जिन्होंने इस बात का पर्दा रखा ख़बर नहीं वे कहाँ गये होंगे। अगर महाभारत की हिन्दू फिलॉसफी ठीक है तो इनमें से कोई भी पार नहीं गया होगा क्यों कि इन सब ने पर्दा रख के हम भोले-भाले जीवों को अपने जाल में फँसाने की कोशिश की है कि हर महीने आते रहो, दसौंध देते रहो, गद्दियाँ व डेरे बनाते रहो और पन्थ चलाते

रहो । यह देख लो ! :—

चौथे वसिष्ठ महामुनि ज्ञानी देखा कुल का नासा।
बिश्वामित्र के हाथ पलट गया ज्ञान योग का पासा ।।

ऐसे ही सब सन्तों का हाल है :—

पंचम दशरथ अवध नरेशा श्रवण ऋषि को मारा।
पुत्र वियोग प्राण को त्यागा मिला न राम सहारा ।।
छठे इन्द्र की करनी समझो शाप बृहस्पति दीन्हा।
भगमय देवराज की काया करम का फल यह लीन्हा ।।
चन्द्र कलंकित काम वेग से जाने सब संसारा।
करम अटल है महाबली है कोई कोई करे बिचारा ।।
रावण बाली भरत जड़ ज्ञानी ऋषि के सुत दुर्वासा।
करम किया तैसा फल पाया अन्त में भया उदासा ।।
सुन प्रसंग चित्त अपना साधो सोधो मन करम बानी।
शब्द योग कर जन्म बनाओ राधास्वामी की सहदानी ।।

अब आप सोचो यह कर्म कौन करता है ? हमारा मन करता है। तो कबीर साहिब कहते हैं :—

मन को मारूँ पटक कर टूक-टूक हो जाय।
विष की क्यारी बोय कर लुन्ता क्यों पछताय ।।

यह कर्म का चक्कर हमारे मन से होता है न!

तो कबीर साहिब कहते हैं कि भई, जैसा तू ज़हर बीजता है तो फिर फल खाता है तो रोता किस वास्ते है ? यही बात वेद कहते हैं "शिवसंकल्पमस्तु" हमेशा अच्छा ख्याल रखो, अपना भला चाहो, अपने परिवार का भला चाहो, मिलने वालों का भला चाहो । तुम्हारे ख्याल में ताक़त है इस लिए इस मन को सम्भालना है ।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि यह मन है क्या चीज़ ? ज़मीन के बीच में बीज पड़ा हुआ है, सूर्य की रौशनी आती है तो वह बीज फटता है । उसमें से अंकुवा व पत्ते निकलते हैं ऐसे ही यदि आप विचार करो कि आप कौन हैं, हमारा आद क्या है ? हम सब माँ के पेट से आये हैं या कि नहीं आये ? आज छः-छः फुट के जवान हैं, आये कहाँ से ? माँ के पेट से । माँ के पेट में बाप के वीर्य का एक कीड़ा गया तो हमारी सबकी जो असली हैसियत है वह है एक Super Metoria जर्म और आज हम देखो क्या कुछ बने हुए हैं । अब सवाल यह है कि वह Super Metoria जर्म कहाँ से बनता है ? बाप के खून से । खून कहाँ से बनता

है ? जो खुराक आप खाता है उससे खून बनता है । कोई खुराक इस संसार में पैदा नहीं होती जब तक उसके ऊपर सूर्य या सितारों की किरणें नहीं आतीं । तो उस Super Metoria जर्म के बीच में क्या चीज है ? रौशनी Light । जब रौशनी उस कारण शरीर या जिस्म में आती है तो क्या होता है ? मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार पैदा हो जाते हैं और वह हमारे अन्दर में हमारा मन है । तो जिस किस्म के संस्कारों व खुराक से हमारा जिस्म बना है और जिस किस्म के संस्कारों व असरात से बच्चा पेट में पला है उस किस्म के असरात आदमी के अन्तर से लाजमी उठेंगे, लाख कोई कोशिश करे । जिसको ग्रह नीच पड़े हुए हैं तुम लाख कोशिश करो कि वह गन्दा काम नहीं करेगा वह जरूर करेगा, उसके वश की कोई बात नहीं है । इसी वास्ते मैंने सुबह कहा था कि सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा किया जाय ताकि जो बच्चा पैदा हो वह ठीक हो । वासना का संस्कार है, ख्याल की दुनिया है । तो इस मन को ठीक करने के लिए क्या किया जाय ? पहले तो सोहबत चाहिए । जिस सोहबत में

बच्चा पलता है, जिस किस्म के माँ-बाप होते हैं वह असरात पड़ते हैं। माँ-बाप लड़ते रहते हैं घर में झगड़ा रहता है स्त्री पति से लड़ती है उस की लड़कियाँ हैं, जो कुछ वे देखती हैं जब उन की शादी हो जायेगी वे भी पतियों के साथ लड़ेंगी।

सत्संग सभी करते हैं, सत्संग करने से क्या बन जायगा, जब तक कि सत्संग को सुन कर के, उसको गुन कर के व उस पर विचार कर के इन्सान अमल नहीं करता तो सत्संग करने से क्या फ़ायदा ? कोई फ़ायदा नहीं। तो कबीर साहिब ठीक कहते हैं :—

यह मन फटक पिछोड़ ले सब आपा मिट जाय।
पिंगला होय पिउ करे ता को काल न खाय॥

वो कहते हैं इस मन को फटक, पिछोड़ ले, छान ले, क्या मतलब ? कि जो तुम्हारे गन्दे ख़्यालात हैं उन को निकाल दो। छाज में क्या करते हैं ? यही करते हैं ! कि जो गन्दमन्द होता है उसको निकाल देते हैं। कबीर साहिब कहते हैं इस मन को फटक, पिछोड़ दो अर्थात् सत्संग में जा कर बात को समझो और जो ग़लतियाँ हम करते हैं उनको ठीक करो। वाणी है :—

एक घड़ी आधी घड़ी आधी की पुन आध ।
तुलसी संगत साध की कटे कोटि अपराध ॥

दुनिया ने यह समझा हुआ है कि साधु के पास चले जाओ तो उसने जो ग़लतियाँ खाई व क़सूर किये हुए हैं वे माफ़ हो जायेंगे, यह ग़लत है। अपराध कहते हैं ग़लती को। सत्संग में जा करके यदि कोई साधु हो तो वहाँ से उसके वचनों से आदमी को यह पता लगता है कि मैं कौन-कौन सी और कहाँ-कहाँ ग़लतियाँ खाता हूँ, क्या-क्या मैं ग़लत ख़्याल सोचता हूँ, तो उस ख़्याल से उसकी जो ग़लतियाँ हैं वे कट जायेंगी, इस का मतलब यह है। दुनिया ने इसका मतलब यह समझा हुआ है कि साधु के पास चले जाओ, बस नाम ले जाओ तुम्हारे पाप कट जायेंगे, यह ग़लत है। आजकल यह गुरुइज़्म नहीं है गोर्डइज़्म है। नाम ले जाओ जी! नाम मिलता है गुरु सारे पाप ले लेता है। मैं इसको कैसे मानूँ, अगर यह बात सच होती तो गुरु से नाम लेने के बाद भी किसी की टाँग टूटी और कोई कैन्सर से मरा, यदि पाप कटे हुए होते तो उनको ये तकलीफ़ें क्यों आतीं! ये सब रोचक

और भयानक बातें हैं। मैंने यह दशा देखी मेरे दिल में दर्द आया। मैं कहता हूँ इन वाणियों ने हमको चक्कर में डाल दिया। मैं आप इन वाणियों के चक्कर में आया हुआ था, मैं सोचता हूँ रास्ते को साफ़ कर जाऊँ ताकि जिस किसी ने ज़िन्दगी की घड़त करनी है वह कर ले जिस ने नहीं करनी है वह न करे। मैं कोई ठेकेदार थोड़ा बन के आया हूँ। तो सत्संग से आदमी को यह पता लगता है कि मैंने क्या ग़लती खाई है और कहाँ ग़लती खाई है :—

मन पाँचों के वश पड़ा मन के वश नहिं पाँच।
जित देखूँ तित दौं लगे जित भागूँ तित आँच॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये मार लेते हैं मन को। लोग कहते हैं काम मार दो, क्रोध मार दो, लोभ मार दो। अरे बाबा! यदि जिसमें काम नहीं है तो वह तो हिजड़ा है, वह तो ताली बजाना जानता है। यदि तुम में क्रोध नहीं है तो जो भी उठेगा तुम को ठोकर मारेगा। अगर तुम में लोभ नहीं है तो रोटी कहाँ से कमा के खाओगे। अगर मोह नहीं है तो इस दुनिया की ज़िन्दगी नहीं

रह सकती। अहंकार नहीं है तो तुम्हारे किसी काम में मज़बूती कैसे आयेगी। इसका यह मतलब नहीं है, न ये किसी ने मारे और न ये मर सकते हैं, इनका यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए ताकि ये तुम्हारे कंट्रोल में रहें, मन हमारा इनके जज़्बात के कंट्रोल में न आये इतनी ही बात है और कुछ नहीं :—

> कबीर बैरी सबल है एक जीउ रिपु पाँच।
> अपने-अपने स्वाद को बहुत नचावें नाच॥

ये पाँच जज़बात जो हैं ये दुश्मन हैं। अपने-अपने स्वाद के लिए आदमी कामातुर हुआ-हुआ क्या कुछ नहीं करता। लालच के वश में आ के चोरी करता है, डाके मारता है तो कबीर साहिब कहते है इस मन को क़ाबू करना चाहिए। अब यह मन क़ाबू कैसे किया जाय? इसका एक इलाज़ है सत्संग, वह भी उस आदमी का जिसका मन वश में हो, जिसका मन अपने क़ाबू नहीं है उससे तुम को फ़ायदा नहीं पहुँच सकता। पैबन्द लगाओ। तुख़म की तासीर और सोहबत का असर

ज़ाया नहीं जाता। हो सकता है कि यदि तुम खट्टे को मिट्ठे का पैबन्द लगा दो तो सन्तरा या मुसम्मी बन जायेगा परन्तु यदि तुम यह चाहो कि वह अपनी खटास बिलकुल छोड़ दे, यह नहीं हो सकता। इस वास्ते तुख़म, तासीर और सोहबत का असर ज़रूर होता है :—

कबीर मन तो एक है भावें कहीं लगाय।
भावें गुरु की भक्ति कर भावें विषय कमाय॥

अब गुरु की भक्ति क्या है? दुनिया ने तो यह समझा हुआ है बाबा फ़कीर आया, दो रुपये दे दो, कपड़े पहिना दो। अरे बाबा! यह भक्ति नहीं है। गुरु की भक्ति है, मैंने सुबह भी कहा था कि जो वचन गुरु कहता है उस की वाणी को सुन कर उस को गुनो और जो बात अच्छी लगती है उस पर अमल करो। यह है गुरु भक्ति असली और सच्ची, बाकी जितना काम है यह दुनिया का व्यवहार है। जैसे मैं यहाँ आया लाऊडस्पीकर भी चाहिए, खाने

को पैसा भी चाहिए यह संसार का व्यवहार है और होना चाहिए।

— — — —

शुद्धि :—पेज़ नं. 32 की चौथी लाईन से इस प्रकार पढ़ें—चार सौ बीस करनो मैं इसको कुकर्म समझता हूँ, बाकी, दुनिया के कारोबार में जहाँ अपनी ज़ाती ग़रज़ नहीं कोई जैसे एक जज......

★

सत्संग परम सन्त मानव दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 13-6-82

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
परमतत्त्वस्य अवतारं परं पूज्यं सत्संगिनाम् ।
मानवस्य परम् इष्टं फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ।।
पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

राधास्वामी !

जगद्गुरु, परम तत्त्व के अवतार, सत्संगियों, सभी मनुष्यों व मानव के परम पूज्य, सबसे ऊँचे जो महाराज फ़कीर चन्द जी हैं उनको मैंने यह नमस्कार किया है क्योंकि उन्हीं के सत्संग से शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के कर्मों से हम छूट

सकते हैं और कर्मों से छूटने पर ही हम उस परम तत्त्व, अपने निज धाम व निज घर को जा सकते हैं जिसको पाये बिना हमें चैन नहीं आ सकता। सूरदास जी ने भी एक जगह कहा है :—

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे।

लोग कहते हैं चैन नहीं है। चैन कैसे हो! चैन धन में नहीं है, सम्पत्ति में नहीं है, घर की खुशी में भी नहीं है। यह सब होना चाहिए, यह तो किसी ने नहीं कहा कि आप ग़रीब रहो। तुलसीदास जी ने कहा है कि सब से बड़ा पाप और शाप, अभिशाप दुनिया में क्या है? ग़रीबी। ग़रीब तो नहीं होना चाहिए परन्तु अमीर जो हैं क्या वे सब सुखी हैं? बल्कि इनको और भी कष्ट होते हैं, चोर का डर, इन्कम टैक्स का डर, किस्म-किस्म के डर होते हैं, कहने का मतलब यह है कि ग़रीबी न हो, बैंक बैलेंस बेशक बिलकुल नहीं हो, भार होता है। हमारे मन पर भार किसका है? कर्मों का बैलेंस है, कर्म जमा हुए हुए है। आज आपको बताऊंगा कि कितने प्रकार के कर्म होते हैं। कर्मों

का भार कब उतरता है ? पैसा है, सुख है, बड़ी इज़्ज़त है फिर भी चैन नहीं आता, क्यों नहीं आता? असल में आपकी आत्मा जो है वह अन्दर में कह रही है कि सुख तभी मिलेगा कि जब निज घर को पहिचानोगे। जब तक मालिक के साथ तार नहीं बंध जाती तब तक पूरी शान्ति नहीं आ सकती। इसीलिए सूरदास जी ने कहा है :—

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे।
जैसे उड़ि जहाज़ को पंछी, पुनि जहाज पर आवे।

मेरा मन और कहाँ सुख पा सकता है! समुद्र के अन्दर जहाज़ जा रहा है, पंछी जहाज़ पर रहता है, उड़ जाता है, फिर से वहीं आ जाता है। हम पंछी, निज धाम, परम तत्त्व या मालिक रूपी जहाज़ से उड़ कर आये हैं और प्राण पखेरू उड़ कर ही मालिक के पास जा सकते हैं। मालिक जो यहाँ भी सबके अन्दर मौजूद है उसको ढूँढ़ लो और वह बात समझ लो जो दाता दयाल ने कही थी :—

अब आदमी कुछ और हमारी नज़र में है।
जब से सुना है यार लिबासे बशर में है।।

ऐ इन्सान! उस मालिक को कहाँ ढूँढ़ते हो!

अरे, माशूक मनुष्य के रूप में है !! इसीलिए परम दयाल जी महाराज ने कहा है कि मनुष्य बनो। व्यक्ति, मनुष्य तब बनता है जब अपनी असलियत को जान जाता है और उसका मालिक से तार बंध जाता है, उससे पहिले पूर्ण मनुष्यता प्राप्त नहीं हो सकती। जब तार बंध जायेगा और पंछी को जब अपने जहाज़ का पता मिल जायगा फिर ही सुख और शान्ति होगी।

मैंने महाराज जी को जगद्गुरु, परम तत्त्व का अवतार कह कर नमस्कार किया है। वे परम तत्त्व के ऐसे अवतार थे जिनके स्पर्श मात्र से आपके कर्म छूट सकते हैं। महाराज जी ने मुझे आदेश दिया है इस लिए सत्संग तो मैं दूंगा ही, क्या करूँगा ? महाराज जी ने जो छोटी-2 बातें कही है उनके अन्दर क्या भेद भरा हुआ है, क्या राज़ है वह आपको बताऊंगा, इससे आपकी रूहानियत में उन्नति होगी परन्तु आप ने महाराज जी के चरण स्पर्श कर लिये, दर्शन कर लिया आपको कह सकता हूँ कि आप मुक्त हो गये, आप सत्तलोक को जाओगे बशर्ते कि आप स्वयं

उनके बताये हुए मार्ग से विचलित न हों, यह और बात है कि आप की अपनी मर्ज़ी न हो। महाराज जी जिसको कहें कि मैं तुम्हें फ़कीर बनाऊँगा, कोई नहीं बनना चाहे उसकी अपनी मर्ज़ी ! धन्य हो जो आप इस मन्दिर में बैठे हुए हो। सांसारिक दृष्टि से मालिक ने मुझे बहुत लीलाएँ दिखाईं, लिखते थे, अरे शर्मा ! तू बहुत अच्छा काम करेगा ! और नीचे लिखते थे मैं अब बुड्ढा हो गया ! मैं चला जाऊँ तो मन्दिर में जल्दी उसी वक्त आ जाना। इस बात की ओर तो मैं कोई ध्यान ही नहीं देता था कि आ जाना या न आ जाना, मैं कहता था मालिक ! आप बैठे हैं, आप हमारे साथ ज़्यादा समय रहें, हमारे साथ धोखा हुआ कुछ ! रह सकते थे !! महाराज जी बुड्ढों की लीला करते थे ! वरना हम से तेज़ चलते थे और हम से ज़्यादा ताक़त थी उनके अन्दर। मैंने उनको लिखा कि इस साल आप नहीं आना। पहिले मंज़ूर कर लिया कि नहीं आना परन्तु उन की मौज थी, जब आने लगे उन्होंने लिखा कि मैं अब के शायद डा० घई को या परस राम को इन दोनों में से एक को लाऊंगा। टिकट भेजने वाले

थे डा० रामदेव जी और महाराज जी के परम भक्त सिहरा साहिब। इन्होंने और दूसरे अमरीकी लोग जो रात दिन यही सोचते थे कि महाराज जी की सेहत अच्छी बनी रहे, मुझे कहा तो मैंने लिखा कि आप कह रहे हैं कि परस राम जी और घई साहिब में से किसी को लायेंगे, आप से हमारी प्रार्थना यह है कि आप परस राम जी को ही लायें, सभी लोग यहाँ पर कहते हैं, इन सब की तरफ़ से प्रार्थना है, मेरी तरफ से है, रामदेव जी की तरफ़ से व सिहरा साहिब की तरफ़ से, ग्लोरिया व मार्सिया व जॉन मिल्लर की तरफ से है कि आप ऐसा करें महाराज जी ! आप को ज्योतिषी ने कहा है कि आप पाँच बार और अमरीका जायेंगे, तो घई साहिब मेरे बड़े परम मित्र हैं लेकिन मैं चाहता हूँ कि घई साहिब को फिर ले आइये, अब के तो आप कृपा करके परस राम जी को साथ लायें। क्यों कह रहा हूँ परस राम जी को साथ लाने को ? परस राम जी ने मुझे कभी रिश्वत तो दी नहीं, बनिया क्यों पैसे देगा ब्राह्मण को, मुश्किल है (यह उन से मैं मज़ाक कर रहा हूँ)। परस राम जी बहुत श्रेष्ठ हैं, महाराज जी की इतनी

लगन से सेवा करते थे कि मैंने तो किसी को देखा नहीं, या तो मामचन्द जी को देखा, वह तो थे नहीं। दिन रात महाराज जी के साथ रहना, एक आहट होने पर चौंककर उठ बैठना कि महाराज जी क्या कहते हैं, माँ से भी ज़्यादा परस राम जी सेवा करते थे। महाराज जी इन को मेल मम्मी कहा करते थे और जहाँ, जिस घर में भी जाते परस राम जी कहते कि महाराज जी मालिक-ए-कुल हैं। इन के इस कहने से ही लोगों को दुनिया से बड़ा वैराग्य हो जाता था। यह तो मालिक-ए-कुल हैं इन का खाना जो है ऐसा-ऐसा होगा। उससे वह बिलकुल ठीक रहते थे, कभी हस्पताल जाने ही नहीं देते थे, ज़रा सी कोई बीमारी होती, एक दवाई, तो दूसरी दबाई, तीसरी दवाई देते और हुक्का पिलाते। हमारे मन में यह विचार था मैंने लिखा कि महाराज जी! परस राम जी सब कुछ जानते हैं इस लिए आप कृपा करके अब के तो इस दफ़ा सिर्फ़ परस राम जी को साथ ले आयें, हमारी यह प्रार्थना है, नहीं तो हम दोनों का किराया देने को तैयार हैं परन्तु यह महाराज कभी मानते नहीं थे, ज़्यादा किराया क्यों दें! हमने आखिर तक दोनों

के नाम से वीज़ा के लिए लिखा था। मुझे लिखा कि जो कुछ कुदरत ने किसी से काम लेना होता है, वह लेकर रहती है, मैं घई को लेकर आ रहा हूँ, बड़ा अच्छा है, यह है, वह है और फिर नीचे लिखते हैं, आ रहा हूँ अमरीका खेल खेलने के लिए, जैसे-2 होगा वैसे-2 खेलूंगा। परम तत्त्व थे, सब जानते थे ! मैं इस लिए आपको बड़े विश्वास के साथ कहता हूँ; आपने जो उनके चरण स्पर्श कर लिये, उनका दर्शन कर लिया आप मुक्त हो जायेंगे बशर्ते कि आप खुद उस रास्ते से नही हटें।

मानवस्य इष्टम्—मानव मुझे मान लें। उन की बड़ी महिमा यह थी कि कहते थे कि कोई इष्ट बना लो भाई ! मैं नहीं कहता कि बाबा फ़कीर को पूजो। देखो क्या लीला है !

इस मंगलाचरण में फिर मैंने उपनिषद् का एक मन्त्र जोड़ा है जो महाराज जी को बहुत पसन्द था वह मैंने कहा, पूर्णमदः ! निज धाम जहाँ से हम आये हैं वो परिपूर्ण है, उसमें कोई

कमी नहीं है, जब उसमें कोई कमी नहीं है तो वहाँ पहुँच कर तो सब सुख, दुःख से परे हो जाते हैं। पूर्णमिदम् ! हम जो उस परम तत्त्व से निकले हैं हम भी पूर्ण हैं जबकि हमें दुःख होते हैं, सुख होते हैं। मैं कहता हूँ हैं पूर्ण आप, भूले हुए हैं ? घर से निकल कर आ गये हैं, रास्ता भूल गये, भटक गये सिर्फ़। घर कहाँ है ? घट के अन्दर है। पूर्ण सब हैं आप, देखने वाली आँख चाहिए, समझने वाली अक्ल चाहिए और ज्ञान चाहिए। आप देखते नहीं, क्यों महाराज जी कहा करते थे, मेरे सत्संगियो ! मैं आपके पाँव पड़ता हूँ। आप अपनी पूर्णता को जानो। आप बैठे हैं साँस ले रहे हैं, प्राण चल रहा है क्योंकि आप परम तत्त्व से जुड़े हुए हैं, यह पूर्णता है। पत्थर साँस नहीं लेता। आप कहेंगे पशु साँस लेता है, बुद्धि भी है परन्तु पशु के पास परम तत्त्व से जोड़ने वाली सुरत की ताक़त नहीं है जो मनुष्य में है। आप के अन्दर सुरत की शक्ति है। अपने जीवन के रास्ते को चुन सकते हो या तो जीवन के रास्ते को घृणा

करके साँकरा व टेढ़ा बना लो या महाराज जी के असूलों पर चल कर उसको सीधा बना लो, यह आपकी सुरत को पूरी तरह से आज़ादी है। महाराज जी कहते-2 थक गये, मनुष्य तू पूर्ण है, पुर्ण है, पूर्ण है। पुर्ण हैं आप, उस पूर्ण से निकले हैं, हम हैं तो पूर्ण, पूर्णता की आप में पूरी-2 ताक़त छुपी हुई है लेकिन वह जो छुपी हुई ताक़त है उसको उभारना है व पूर्ण खिला देना है, यह गुरु का काम है। गुरु एक बहुत नर्म-2, धीमे-2 चलने वाली वह समीर है, वायु है। जो आपके दिल की कोमल कली को छू करके खिला देती है। गुरु वही है जिसका प्यार इतना उमंड के जाता है कि वह सबको एक बनाता है, नहीं बनाता तो वह गुरु व सतगुरु नहीं है। निश्चित रूप से उसका प्यार ऐसा होगा जो आपको भी एक बनायेगा और आपके घर वालों से भी अधिक बढ़ायेगा।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्ः पूर्णमुदच्यते।

क्यों पूर्ण कहा आपको ? क्योंकि पूर्ण से निकले हैं। भई ! पूर्ण तो पूर्ण को ही जन्म देगा इस लिए

हम पूर्ण हैं। शुभ और अशुभ कर्म कैसे कटें ? हम उस पूर्णता को इस जीवन में भी और उसके बाद भी कैसे पा जायेंगे ? जब हम अपने आप को पहले समझ लें तब जहाँ से हम आये हैं उसको समझ लें। बेटे का स्वरूप अच्छी तरह से देख लो तो बाप का पता चल जायेगा। बेटे आप हैं, जब आप अपने स्वरूप को पहिचान जाओगे तो उसका स्वरूप अपने आप समझ में आ जायेगा और आप उल्टे रास्ते से सीधे रास्ते, सीधी जगह जहुँच जाओगे :—

उल्टा मार्ग सन्तमता

पहुँचने की निशानी यह है कि इस जीवन में रहते हुए शरीर छोड़ने से पहले आपको यह अनुभव हो जायेगा कि आपके अन्दर वह चीज़ है जो कभी नाश नहीं होती है और इस अवस्था में आप का व्यवहार व बोलचाल ऐसा हो जायेगा कि आप किसी को दुःख नहीं पहुँचावेंगे, जीवन्मुक्ति की अवस्था आ जायेगी।

इस मंगलाचरण में मैंने जगत्गुरुम् कह कर मंगलाचरण किया है। जगद्गुरु का शब्द शंकराचार्य गुरुओं के लिए प्रयोग होता है। इनके यहाँ एक ही

समय में चार जगद्गुरु होते हैं। परम दयाल जी महाराज ने एक बार अमरीका में टेलीविज़न पर सत्संग दिया। वहाँ पर उसी वक्त टेलीफोन से सवाल और जवाब का तरीका है। किसी ने पूछा क्या आप हिन्दु हैं ? उत्तर दिया गया, नहीं ! बुद्ध हैं ? नहीं। जैन हैं ? नहीं। फिर आप ज़रूर पागल होंगे ? महाराज जी ने फ़रमाया मैं हिन्दु भी हूँ, बुद्ध भी हूँ, और जैन भी हूँ, सब कुछ हूँ और कोई भी नहीं। इससे उनका मतलब यह था कि वह सब मज़हबों व धर्मों की संकीर्ण सीमा की दृष्टि से ऊँचे उठ चुके थे और विश्वव्यापी सच्चे मज़हब, मानव धर्म की शिक्षा प्रदान करते थे। ऐसी परम हस्ती को ही जगद्गुरु कह कर पुकारा जाता है इसीलिए मैंने जगद्गुरुम् कह कर मंगलाचरण किया है।

[शेष क्रमश:]

★

मासिक सन्देश

कौन है शादां यहाँ, शादां फ़कत ज़ाते फ़कीर।
ख़ुश नहीं हरगिज़ तवंगर मालो ज़र वाले अमीर ।।

मेरे प्यारे सत्संगियो !

पिछले मासिक सन्देश में मैंने आपसे राधास्वामी नाम के बारे में बातचीत की थी और बताया था कि यह नाम परम तत्त्व और सर्वाधार का ही नाम है। इसी की ही खोज में और इसी को समझने के लिए सभी धर्म, सभी मतमतान्तर लगे हुए हैं। यह नाम निज धाम पर पहुँचने का रास्ता भी है, और वह हालत भी है जिसको पा कर आदमी सुख-दुःख, लाभ-हानि और हर किस्म के द्वन्द्वों से ऊपर उठ जाता है। इसी हालत को ही जीवन्मुक्ति कहा गया है।

परम दयाल जी महाराज ने न ही केवल खुद इस अवस्था या हालत का अनुभव किया बल्कि सब

सत्संगियों को सीधी-सादी भाषा में इस अवस्था पर पहुँचने का उपदेश देते रहे। सच्चा गुरु वही होता है जो अपने शिष्य को अपने जैसा बना देता है। ऐसे गुरु की प्रशंसा दुनिया के सभी धर्मों में की गई है। इसी दृष्टि से गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है। खासकर सनातन धर्म और सन्तमत में गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा का बहुत महत्त्व है। मानवता मन्दिर में हर साल गुरु पूर्णिमा मनाई जाती है। क्योंकि इस साल परम दयाल जी महाराज के चोला छोड़ने के बाद यह पहली गुरु पूर्णिमा थी, इसलिए इसे पांच और छः जुलाई दोनों दिन मनाया गया। दूर-दूर से भारत के कोने-कोने से प्यारे सत्संगी तीन जुलाई को आना शुरू हो गये थे। यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि सभी सत्संगियों और मानवता मन्दिर से सम्बन्धित आचार्यों और गुरुओं के लिए परम दयाल जी के प्रति अपना सच्चा प्यार और श्रद्धा प्रकट करने का यह सबसे अच्छा अवसर था। अमेरिका के एक आचार्य डा० विलियम रोडनहाईज़र अपने परिवार के चार सदस्यों के साथ लगभग एक लाख रुपया खर्च करके व्यास पूर्णिमा पर अपने परम गुरु परम दयाल जी को श्रद्धा के फूल अर्पित करने के लिए सख़्त गर्मी

के मौसम में गुरु पूर्णिमा से एक सप्ताह पहले ही होशियारपुर पहुँच गये। जब डा० रोडनहाईज़र चण्डीगढ़ से बोर्ड ऑफ् ट्रस्टीज् के प्रधान श्री के. एम. परदेसी के साथ 26 की प्रातः को मानवता मन्दिर पहुँचे तो वह सीधे सत्संग भवन में परम दयाल जी की मूर्ति को नमस्कार करने के लिये गये। याद रहे कि डाक्टर रोडनहाईज़र 1981 की वैसाखी पर भी होशियारपुर आये थे और पिट्ज़्बर्ग के मर्सी हस्पताल में परम दयाल जी महाराज के आपरेशन से पहले तीन दिन लगातार मेरे साथ परम दयाल जी को मिलते रहे। ज्योंही प्रोफेसर रोड़नहाईज़र महाराज जी की सिंहासन पर रखी हुई उनकी भव्य मूर्ति के आगे जा कर उनके चरणों में झुके वह अपने आँसू रोक ही नहीं सके। न ही केवल इतना बल्कि वह सिसकियाँ लेते हुए सत्संग भवन के दरवाज़े पर खड़े हो कर ज़ार-२ रोने लगे। श्री परदेसी ने उनके कन्धों पर हाथ रख कर उन्हें ढाढ़स बन्धाई। हज़ारों मोल दूर विदेश से आने वाले परम दयाल जी के यह भक्त विश्व विख्यात प्रोफेसर और ईसाई धर्म के मान्य पुरोहित होते हुए बच्चों की भान्ति बिलख रहे थे।

धन्य है इनका प्यार और श्रद्धा। महाराज जी ने ठीक ही इन्हें ख़ुद ही सन्तमत का आचार्य चुना था। महाराज जी की इस आज्ञा का पालन करते हुए व्यास पूर्णिमा के दिन मैंने आचार्य प्रोफ़ेसर रोडनहाईज़र का तिलक करके मानवता का चोला पहनाया। यह दृश्य भी एक विशेष दृश्य था। तिलक के बाद प्रोफ़ेसर रोडनहाईज़र ने परम दयाल जी महाराज के पिट्ज़बर्ग के हस्पताल में आपरेशन से पहले कहे गये इन शब्दों को दोहराया, "प्रोफ़ेसर रोडनहाईज़र! मैं हस्पताल के बिस्तर पर हूँ। अफ़सोस है कि मैं आपकी कोई मेहमान-नवाज़ी नहीं कर सकता।" आचार्य रोडनहाईज़र ने इन शब्दों को आँसू बहाते हुए रुन्धे हुए गले से कहा, "मैंने ऐसा महात्मा कहीं नहीं देखा, जो ख़ुद पीड़ा में होते हुए भी दूसरों के आराम का ध्यान रखे। ऐसी मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं मिलती।" आचार्य रोडनहाईज़र के जज़बात को सुनकर बहुत से सत्संगी आँसू बहा रहे थे। यह है एक सच्चे शिष्य की अपने गुरु के प्रति श्रद्धा और वफ़ादारी।

मुझे इस बात पर नाज़ है कि चण्डीगढ़, धर्मशाला

और होशियारपुर के सत्संगियों ने आचार्य रोडन-हाईज़र उनके परिवार और तीन अन्य अमरीकी सत्संगियों का भारी सत्कार किया। अब आचार्य रोडन-हाईज़र अपने परिवार सहित भारत का भ्रमण कर रहे हैं। वे कश्मीर, ऋषिकेश, बनारस, देहली और सिकन्दराबाद जायेंगे। इन स्थानों पर जहाँ-जहाँ मानवता मन्दिर से सम्बन्धित केन्द्र हैं वहाँ के आचार्यों तथा अधिकारियों ने कहा है कि वे उनका स्वागत करेंगे। रोडनहाईज़र परिवार भारत में बहुत ही प्रसन्न है।

गुरु पूर्णिमा के इस उत्सव पर मुझे यह जान कर बहुत प्रसन्नता हुई कि होशियारपुर के बाहर से आने वाले सत्संगियों ने इतनी श्रद्धा और भक्ति दिखलाई कि सत्संग में आने वाले सत्संगियों की संख्या इतनी अधिक थी कि पिछले बीस सालों में इसकी मिसाल नहीं मिलती। इसी प्रकार इस गुरु पूर्णिमा के मौक़े पर गुरु दक्षिणा की भेंट जो इकट्ठी हुई वह पिछले वर्षों की भेंट का रिकार्ड तोड़ गई। मैं सत्संगियों का आभारी हूँ।

मुझे सत्संगियों के इस प्रेम और त्याग को देख कर महाराज जी के वे शब्द याद आ गये जो उन्होंने मुझे कहे थे "मानव दयाल! तू इस संसार में एक मक़सद ले कर आया है। तेरी ज़ाते पाक

के ज़रिया यह मानवता, यह सत्यता का धर्म विश्व में फैलेगा, फैलेगा, फैलेगा !!!" मैं परम दयाल जी महाराज की इस दया का आभार कभी नहीं चुका सकता। इसलिए शरणागत होने के नाते मैंने अपना जीवन परम दयाल जी महाराज की आज्ञा का पालन करने में लगा दिया है। उनके आशीर्वाद से सत्संगियों और ट्रस्टियों के सहयोग से मैं परम दयाल जी की इच्छा पूर्ण करने के लिए उनके मिशन को ज़रूर पूरा कर सकूंगा और उनकी ही दया से मानवता मन्दिर को विश्व के लिए प्रेम, शान्ति और आनन्द का केन्द्र बनाने में सफल हो सकूंगा।

इसके आसार मानवता मन्दिर होशियारपुर में अभी से ही दिखाई दे रहे हैं। जो भी सत्संगी बाहर से आ कर मानवता मन्दिर में ठहरते हैं, कहते हैं कि उन्हें यहाँ आने पर इतनी शान्ति प्राप्त होती है जो उन्हें और कहीं नहीं मिलती। मैं यह समझता हूँ कि यह सब कुछ परम दयाल जी महाराज की कृपा और उनके उन शुभ विचारों की किरणों से हो रहा है जो उन्होंने अपने जीवन काल में इस मन्दिर में छोड़ी हैं। मन्दिर में अब सौ फ़ी सदी शान्ति है।

हे मेरे प्यारे सत्संगियो ! यह परम दयाल जी का मन्दिर आपका है। जैसा कि मैंने पहले कहा है कि में स्थायी रूप से होशियारपुर में हूँ। सच पूछो तो मुझे मानवता मन्दिर से बाहर जाना अच्छा नहीं लगता परन्तु महाराज जी की इच्छा का पालन करना है, इसलिए इस साल से दशहरे और वसन्त के मौक़े पर मैं परम दयाल जी की भान्ति सत्संग का दौरा करूंगा।

उज्जैन, इन्दौर और भोपाल के सत्संगियों के विशेष आग्रह से मैं जुलाई में ही इन स्थानों पर जा रहा हूँ। उसके बाद अगस्त के पहले हफ़्ते से सितम्बर के दूसरे हफ़्ते तक मैं अमेरिका का छोटा दौरा कर रहा हूँ, क्योंकि वहाँ पर भी दो तीन केन्द्रों में सत्संग पर जाना ज़रुरी है। अगस्त का मासिक सत्संग मेरी ग़ैरहाज़िरी में आचार्य रोडन-हाईज़र द्रारा दिया जायेगा क्योंकि वह होशियापुर में मानवता मन्दिर में मेरी अनुपस्थिति में रहेंगे। सितम्बर महीने का मासिक सत्संग मैं ख़ुद ही दूंगा। इसके बाद मैं देहली के दशहरा के सत्संग में उपस्थित

दूंगा। दशहरे के बाद के दौरे का प्रोग्राम सितम्बर के मानव मन्दिर में छप जायेगा।

मेरे प्यारे सत्संगियो! मानवता मन्दिर के वातावरण में सुधार के साथ-2 'मानव मन्दिर' पत्रिका को सुधारने के लिए भी बहुत कोशिश की जा रही है। मुझे बहुत से सत्संगियों के अक्सर पत्र आते थे कि मानव मन्दिर पत्रिका में बहुत ही ग़लतियाँ होती हैं और सिद्ध सत् पुरुष फ़कीर बाबा का पहला भाग जो मानव मन्दिर द्वारा छापा गया है उसमें तो बहुत ग़लतियाँ हैं। पिछले दो महीने से मैं और भाग्य ख़ुद प्रूफ़ को ग़ौर से देख रहे हैं और पत्रिका में काफ़ी सुधार हुआ है। फिर भी सम्पादन तथा छपाई में कुछ ग़लतियाँ रह ही जाती हैं, उदाहरण के तौर पर जुलाई महीने के मानव मन्दिर में परम दयाल जी के सत्संग में सफ़ा 28 के दूसरे पहरे की तीसरी और चौथी लाईन में छपा है "फ़कीर! तुमको काम देता हूँ। तुम में 99 दोष हैं 99, एक सच्चाई है।" मेरे परम गुरु में तो कोई दोष था ही नहीं सत्तपुरुष दाता दयाल

जी महाराज अपने सबसे प्रिय शिष्य के बारे में ऐसा कह ही नहीं सकते थे। उन्होंने तो यह कहा था, "फ़कीर भले ही तुममें 99 दोष क्यों न हों, परन्तु सच बोलने तथा सत्य पर चलने का तुम्हारा एक ही गुण तुम्हारा बेड़ा पार कर देगा।" थोड़े से शब्दों के हेरफेर से कभी-2 बहुत अनर्थ हो जाता है। इसी प्रकार मेरे सत्संग तथा मासिक सन्देश में भी प्रकाशन में कुछ ग़लतियां रह गई हैं, मैं सत्संगियों से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन ग़लतियों की ओर ध्यान नहीं दें। अगले महीने से ऐसी कोशिश की जायेगी कि ग़लतियाँ बिलकुल नहीं हों। सिद्ध सत् पुरुष फ़कीर बाबा अब आत्मा राम एण्ड सन्ज़ जैसे विश्व विख्यात प्रकाशक देहली से प्रकाशित हो चुकी है। जिसका बहुत ज़ोरों से इन्तज़ार था। मेरे परम गुरु की यह इच्छा थी कि मानवता मन्दिर में चाहे सब काम बन्द हो जायँ परन्तु प्रकाशन का काम कभी बन्द नहीं होना चाहिए। मानव मन्दिर पत्रिका परम दयाल जी महाराज की इच्छा के अनुसार सत्संगियों को सदा मुफ़्त ही मिला

करेगी। मुझे आपसे पूरी आशा है कि इस पत्रिका को परम दयाल जी का ही प्रसाद समझ कर इसे पढ़ कर इससे फ़ायदा उठायेंगे और दूसरों को भी पढ़वायेंगे। कुछ पुस्तकें सिद्ध सत् पुरुष फकीर बाबा की तरह समय-समय पर अच्छे-अच्छे मशहूर प्रकाशकों द्वारा कम से कम क़ीमत पर छपवाने का प्रोग्राम है, जिससे परम दयाल जी की शिक्षा विश्व भर में फैलाई जा सके। इस प्रोग्राम को आगे बढ़ाने के लिए मन्दिर से सम्बन्धित सभी लोग सहयोग देंगे, ऐसी मेरी आशा है।

गुरु पूर्णिमा के सत्संगों में और पाँच जुलाई की गोष्ठी में जो सत्संगी उपस्थित थे, उन्होंने तो लाभ उठाया ही, बाकी सब सत्संगियों और मानव मन्दिर के पाठकों के लाभ के लिए ये सत्संग धीरे-धीरे छपवा दिये जायेंगे। गुरु की असली पूजा तो उसकी आज्ञा का पालन करना है और गुरु की असली सेवा उन असूलों को जीवन पर लागू करना है, जिन्हें समझाने के लिए सत्संग दिया जाता है। सत्संग में गुरु सच्चा ज्ञान देकर शिष्य की दुर्गति को दूर करके,

वह रास्ता दिखा देता है जिससे शिष्य के लोक और परलोक दोनों सुधर जाते हैं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने परम गुरु को साष्टांग नमस्कार करते हुए गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सभी सत्संगियों को शुभ कामनाएँ देता हूँ और सच्चे दिल से चाहता हूँ कि वे नेकनीयती से व्यवहार करते हुए सच्चे मनुष्य बनने की कोशिश करें ताकि मन के शुद्ध होने के बाद अभ्यास करते हुए वे मंज़िले मक़सूद पर पहुँच सकें। सब को मेरा राधास्वामी।

सदा आपका फ़क़ीरमय

मानव

आवश्यक सूचना

परम सन्त हुजूर मानव दयाल जी महाराज का सत्संग का दशहरे का दौरा अक्टूबर के महीने में होगा। यू. पी. और राजस्थान के जिन केन्द्रों से निमंत्रण आये हुए हैं वहाँ का प्रोग्राम और तारीखें सितम्बर के मानव मन्दिर में प्रकाशित हो जायेंगी।

सैक्रेटरी

INCOME AND EXPENDITURE STATEMENT OF MANAVTA SAHAKARA SANGAM, CHINTAL BASTI, HYDERABAD FOR THE PERIOD 1980–82

INCOME

		Rs. Ps.
1.	Total share amount	26,111.00
2.	Total interest and fines for the years (1978-80) (1-4-78 to 31-3-80)	1,075.00
3.	Total interest and fines for the years (1980-82) (1-4-80 to 31-3-82)	2,272.10
4.	Total interest received from bank.	267.04
5.	Last year general body meeting expenditure balance	35.26
		29,760.40

EXPENDITURE

		Rs. Ps.
1.	Loan outstanding on members account	23,665.00
2.	Stationery & miscellaneous account for 1980-82	25.00
3.	Donation for Radhaswami Satsang Bhavan	1,100.00
4.	General Body Meeting expenditure for the current year	72.10
5.	Total dividend for the period 1978 to 1982 for 4 years to be distributed to members	2,175.00
6.	Cash in Bank : R. S. Bhavan—1468.06 Society —1255.24	2,723.30
		29.760.40

PRESIDENT AUDITOR

GENERAL SECRETARY TREASURER

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1, ਪੇਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7, ਨਾਮ ਦਾਨ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. Realization of Reality. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.
17. Republic day Message 26-1-81. 18. Radha Swami Dayal's Divine Message on Self Realization.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1. अनुभवसार। 2. सन्तमत लेखमाला भाग 1
3. सन्तमत लेखमाला भाग 2

वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥

तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥

रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥

सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय॥

मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
22-8-82 को होगा।

Regd. No. 2626574 AUGUST 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283. Sh. A. Hanamanth Rao
H. No. 1-10-3-194/8
Hamayun Nagar Hydrabad
A.P. 500023.

From

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb